International Journal of Multidisciplinary Research and Growth Evaluation.

सतनामी समुदाय का समावेशी विकास और प्रगति: एक अनुभवजन्य निष्कर्ष (बिलासपुर, छत्तीसगढ़ के संदर्भ में)

संदीप कुमार साहू 1*, निर्मला तिग्गा 2

[1] डॉक्टोरल फेलो, (यूजीसी नेट-जेआरएफ एवं सेट), मानव विज्ञान एवं जनजातीय विकास विभाग का शोधार्थी, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

[2] डॉक्टोरल फेलो, (यूजीसी नेट-जेआरएफ एवं सेट), मानव विज्ञान एवं जनजातीय विकास विभाग का शोधार्थी, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

* Corresponding Author: **संदीप कुमार साहू**

Article Info

ISSN (Online): 2582-7138
Impact Factor (RSIF): 7.98
Volume: 07
Issue: 01
Received: 12-11-2025
Accepted: 14-12-2025
Published: 16-01-2026
Page No: 500-505

सारांश

भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में ऐतिहासिक रूप से वंचित समुदायों का समावेशी विकास सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना हेतु अत्यंत आवश्यक है। सतनामी समुदाय, जो गुरु घासीदास जी के समतावादी एवं मानवतावादी सिद्धांतों पर आधारित एक प्रमुख दलित संप्रदाय है, छत्तीसगढ़ की सामाजिक संरचना में विशेष स्थान रखता है। यद्यपि भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त समान अधिकारों के बावजूद यह समुदाय लंबे समय तक जातिगत भेदभाव, शैक्षिक पिछड़ेपन और आर्थिक असुरक्षा से प्रभावित रहा है। प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के संदर्भ में सतनामी समुदाय के समावेशी विकास और प्रगति का अनुभवजन्य विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस शोध का उद्देश्य सतनामी समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भौतिक जीवन-स्थिति, शैक्षिक उपलब्धियों, आर्थिक गतिविधियों तथा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं को समझना है। अध्ययन समावेशी विकास की अवधारणा के अंतर्गत यह विश्लेषण करता है कि किस प्रकार शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाएँ और राजनीतिक भागीदारी सतनामी समुदाय के जीवन को प्रभावित कर रही हैं। गुरु घासीदास के आंदोलन से प्रेरित यह समुदाय समानता और आत्मसम्मान की चेतना का वाहक रहा है, किंतु आधुनिक समय में इसके समक्ष अनेक संरचनात्मक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अध्ययन में प्राथमिक तथ्यों के संग्रह हेतु उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन तकनीक द्वारा बिलासपुर जिले के *30* सतनामी परिवारों का चयन किया गया। तथ्य साक्षात्कार अनुसूची, गहन साक्षात्कार, गैर-सहभागी अवलोकन एवं व्यैक्तिक अध्ययन विधियों के माध्यम से एकत्र किए गए । अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि शिक्षा के प्रति जागरूकता, सरकारी कल्याणकारी योजनाओं और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के कारण सतनामी समुदाय में सामाजिक चेतना और आत्मसम्मान में वृद्धि हुई है। तथापि उच्च शिक्षा, स्वरोजगार, स्वास्थ्य सुविधाओं और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में अभी भी पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है। निष्कर्षतः सतनामी समुदाय का समावेशी विकास बहुआयामी प्रयासों के माध्यम से ही संभव है, जिसमें राज्य, समाज और समुदाय की सक्रिय सहभागिता अनिवार्य है।

DOI: https://doi.org/10.54660/.IJMRGE.2026.7.1.500-505

बीज शब्द: सतनामी समुदाय, समावेशी विकास, सामाजिक न्याय, दलित अध्ययन, सामाजिक परिवर्तन

परिचय

भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता में सतनामी समुदाय की अपनी विशेष पहचान है, जो सामाजिक न्याय, समानता और आत्मसम्मान की आकांक्षा से जुड़ी हुई है। यह समुदाय मुख्य रूप से छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में पाया जाता है और ऐतिहासिक रूप से दलित वर्ग के अंतर्गत शोषण और भेदभाव का शिकार रहा है (अम्बेडकर, 1936) [1]।

यद्यपि भारतीय संविधान ने समानता और स्वतंत्रता के अधिकार सभी नागरिकों को दिए हैं, फिर भी यह समुदाय शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक दृष्टि से अब भी पिछड़ा हुआ है। सतनामी समाज की उत्पत्ति 17वीं शताब्दी में गुरु घासीदास जी के आंदोलन से जुड़ी है, जिन्होंने जातिगत ऊँच-नीच और कुरीतियों का विरोध करते हुए "सतनाम" पर आधारित विचारधारा प्रस्तुत की। यह विचारधारा सत्य को ईश्वर मानकर सामाजिक समानता और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देती है (शुक्ला, 2001) [7]। समय के साथ इसने सामाजिक और राजनीतिक चेतना के निर्माण में अहम भूमिका निभाई और छत्तीसगढ़ जैसे क्षेत्रों की राजनीति को प्रभावित किया (जैन, 2015) [5]।

समावेशी विकास केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें समाज के कमजोर वर्गों की भागीदारी और अवसरों की समान उपलब्धता को भी शामिल किया जाता है। विश्व बैंक (2008) के अनुसार समावेशी विकास का लक्ष्य असमानता को घटाकर सभी वर्गों तक अवसर पहुँचाना है। सतनामी समाज के लिए इसका अर्थ है शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी में समान अवसर मिलना। ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी आबादी होने के कारण वे कृषि मजदूरी और असंगठित श्रम पर निर्भर हैं (देशपांडे, 2011) [3]। शिक्षा की कमी उनकी प्रगति में बाधक रही है। हालाँकि, पिछले वर्षों में युवाओं का विद्यालयी और उच्च शिक्षा की ओर झुकाव बढ़ा है, जिससे उनमें सामाजिक चेतना और समानता की आकांक्षा मजबूत हो रही है (जनगणना, 2011)।

आर्थिक दृष्टि से अधिकांश लोग अब भी मजदूरी पर निर्भर हैं, लेकिन सरकारी योजनाओं जैसे मनरेगा, आवास योजना और कौशल विकास कार्यक्रमों से कुछ परिवर्तन आया है (योजना आयोग, 2013)। स्वरोजगार और उद्यमिता की कमी अब भी चुनौती बनी हुई है। राजनीतिक दृष्टि से यह समाज अपेक्षाकृत जागरूक रहा है और छत्तीसगढ़ में इसकी जनसंख्या और गुरु घासीदास की विचारधारा ने राजनीति को गहराई से प्रभावित किया है। आरक्षित सीटों के कारण भी इस समाज को प्रतिनिधित्व के अवसर मिले हैं (जांगड़े, 2009)। इससे आत्मविश्वास और सामाजिक सम्मान में वृद्धि हुई है, हालांकि प्रशासनिक सेवाओं और उच्च पदों पर उनकी उपस्थिति सीमित है।

आधुनिक शिक्षा और सूचना तकनीकी ने सतनामी समाज में व्यापक सामाजिक परिवर्तन लाए हैं। पारंपरिक पहनावे और धार्मिक प्रतीकों में बदलाव देखा जा सकता है और नई पीढ़ी आधुनिक जीवनशैली को अपनाने लगी है (साहू, 2020) [8]। सतनामी समाज में सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह और लैंगिक असमानता में भी कमी आई है। इसके बावजूद भी उच्च शिक्षा में भागीदारी कम, आर्थिक असमानता, ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाएँ सीमित, महिलाओं की शिक्षा, सीमित रोजगार और जातिगत भेदभाव जैसे चुनौतियां बनी हुई है।

आधुनिक शिक्षा और सूचना तकनीकी ने सतनामी समाज में व्यापक सामाजिक परिवर्तन लाए हैं। पारंपरिक पहनावे और धार्मिक प्रतीकों में बदलाव देखा जा सकता है और नई पीढ़ी आधुनिक जीवनशैली को अपनाने लगी है (साहू, 2020) [8]। सतनामी समाज में सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह और लैंगिक असमानता में भी कमी आई है। इसके बावजूद भी उच्च शिक्षा में भागीदारी कम, आर्थिक असमानता, ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सुविधाएँ सीमित, महिलाओं की शिक्षा, सीमित रोजगार और जातिगत भेदभाव जैसे चुनौतियां बनी हुई है।

सतनामी समुदाय के समावेशी विकास की अवधारणा

सतनामी समुदाय को मुख्यधारा में शामिल कर समावेशी विकास न्यायसंगत एवं आर्थिक विकास सुनिश्चित करना है। गुरु घासीदास बाबा के समतावादी सिद्धांतों पर आधारित, सतनामी एक दलित संप्रदाय है, जो सामाजिक, आर्थिक असुरक्षा, जाति-आधारित पूर्वाग्रह और शिक्षा तक सीमित पहुँच का अनुभव करता है। छात्रवृत्ति और व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा देना, स्वयं सहायता समूहों, सूक्ष्म वित्त और मनरेगा जैसे सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से आर्थिक सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करना, पूर्वाग्रहों का विरोध करना और राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देकर सामाजिक समावेशन की गारंटी देना है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बिलासपुर शहर की सामाजिक-सांस्कृतिक रूपरेखा का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना।
2. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बिलासपुर के सतनामी समुदाय के जीवन और सामाजिक-सांस्कृतिक संसाधनों का वर्णन करना।
3. सतनामी परिवारों की भौतिक एवं शैक्षणिक स्थिति का आंकलन करना।
4. सतनामी समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में निरंतरता और परिवर्तन का आंकलन करना।

शोध पद्धति

इस अध्ययन में प्राथमिक तथ्य एकत्र करने और उनका विश्लेषण करने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया गया है । सरल सांख्यिकीय विश्लेषण उपकरणों जैसे अनुपात, प्रतिशत आदि का उपयोग करके, निष्कर्षों को सार्थक और आसानी से समझने योग्य बनाने के लिए तथ्यों का विश्लेषण किया गया और उन्हें वर्णात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है । यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर जिले के सतनामी जाति समूहों के लोगों के बीच किया गया है। अध्ययन हेतु 30 नमूना सतनामी परिवारों का चयन किया गया। परिवारों के चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन तकनीक अपनाई गई। साक्षात्कार अनुसूची, गहन साक्षात्कार, गैर-सहभागी अवलोकन और केस अध्ययन विधियों जैसी तकनीकों की सहायता से तथ्य एकत्र किए गए।

अध्ययन क्षेत्र

छत्तीसगढ़ राज्य

छत्तीसगढ़ भारत का नौवाँ सबसे बड़ा राज्य है। जिसका क्षेत्रफल 135,191 वर्ग किमी है और भारत की जनगणना 2011 के अनुसार इसकी कुल जनसंख्या 2.55 करोड़ है। छत्तीसगढ़ देश का 16वाँ सबसे अधिक आबादी वाला राज्य है। संसाधन संपन्न राज्य होने के नाते, यह देश के लिए बिजली और इस्पात का एक स्रोत है, जो कुल उत्पादित इस्पात का 15% उत्पादन करता है (सांख्यिकीय पुस्तिका, 2021)। छत्तीसगढ़ भारत के सबसे तेज़ी से विकसित होते राज्यों में से एक है। इस राज्य का गठन 1 नवंबर 2000 को मध्य प्रदेश के *10* छत्तीसगढ़ी और 6 गोंडी भाषी दक्षिण-पूर्वी ज़िलों को विभाजित करके किया गया था। इसकी राजधानी रायपुर है। छत्तीसगढ़ की सीमाएँ उत्तर-पश्चिम में मध्य प्रदेश, उत्तर में उत्तर प्रदेश, उत्तर-पूर्व में झारखंड, दक्षिण-पश्चिम में महाराष्ट्र, दक्षिण में तेलंगाना और दक्षिण-पूर्व में ओडिशा से लगती हैं। वर्तमान में राज्य में 33 ज़िले हैं। वन कुल क्षेत्रफल का 41.34% घेरते हैं (भारतीय वन सेवा की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार) और समृद्ध वन संसाधनों में लकड़ी, तेंदू-पत्ता, शहद और महुआ शामिल हैं। लगभग 32.05% सघन जंगल, 25.97% मध्यम घने वन, 12.28% खुले वन और 0.09% झाड़ियाँ हैं (Ibid))। राष्ट्रीय शिक्षा सर्वेक्षण रिपोर्ट 2011 अनुसार, छत्तीसगढ़ का शिक्षा सूचकांक बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और

राजस्थान राज्यों से अधिक है। शहरी क्षेत्रों के लिए छत्तीसगढ़ में औसत साक्षरता दर 84.05 प्रतिशत थी जिसमें पुरुष साक्षरता 90.58% थी, जबकि महिला साक्षरता 73.39% थी। छत्तीसगढ़ में 2011 की जनगणना के अनुसार, छत्तीसगढ़ की 93.25% आबादी हिंदू धर्म का पालन करती है, 2.01% इस्लाम का पालन करते हैं, 1.92% ईसाई धर्म का पालन करते हैं और 0.27% कम संख्या में बौद्ध धर्म का पालन करते हैं, 0.27% सिख धर्म का पालन करते हैं, 0.24% जैन धर्म का पालन करते हैं और 3.01% राज्य के जनजातियों द्वारा पालन किया जाने वाला स्वदेशी धर्म सरनावाद का पालन करते हैं। राज्य में लिंगानुपात भारत में सबसे संतुलित है, जिसमें प्रति 1000 पुरुषों पर 991 महिलाएं हैं, जैसा कि बाल लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 964 महिलाओं के साथ है (जनगणना 2011)। भारत (2.6) की तुलना में छत्तीसगढ़ की प्रजनन दर (3.1) काफी अधिक है। जिसमे ग्रामीण प्रजनन दर 3.2 और शहरी प्रजनन दर 2.1 है।

बिलासपुर ज़िला

बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में स्थित एक शहर है। जो जनसँख्या की दृष्टि से राज्य का सबसे बड़ा शहर है | 2011 की जनगणना के अनुसार, छत्तीसगढ़ के बिलासपुर ज़िले की जनसंख्या 2,662,07 है। बिलासपुर ज़िले को राज्य की 'न्यायधानी' की उपाधि प्राप्त है। बिलासपुर उच्च न्यायालय एशिया का सबसे बड़ा उच्च न्यायालय है। यह शहर पूर्वोत्तर छत्तीसगढ़ क्षेत्र का वाणिज्यिक केंद्र और व्यावसायिक केंद्र है। यह भारतीय रेलवे के लिए भी एक महत्वपूर्ण शहर है, क्योंकि यह दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ज़ोन और बिलासपुर रेलवे संभाग का मुख्यालय है। बिलासपुर भारत का दूसरा सबसे स्वच्छ और चौथा सबसे लंबा रेलवे स्टेशन है। बिलासपुर साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड का मुख्यालय भी है। एनटीपीसी, सीपत सहित कई बिजली संयंत्र बिलासपुर के पास हैं। बिलासपुर वर्षा आधारित अरपा नदी के तट पर स्थित है, जो मध्य भारत की मैकाल पर्वतमाला की ऊँची पहाड़ियों से निकलती है। डोलोमाइट से समृद्ध यह क्षेत्र उत्तर में हरे-भरे जंगलों और पूर्व में हसदेव घाटी की कोयला खदानों से घिरा है। बिलासपुर शहर में 87.58% हिंदू धर्म, जिसका लोग पालन करते हैं। 7.78% इस्लाम, 2.84%, ईसाई धर्म, 0.30% जैन धर्म, 1.00% सिख धर्म, 1.00% बौद्ध धर्म एवं लगभग 0.04% लोग अन्य धर्मों को मानते हैं।

सतनामी की उत्पत्ति

भारत के ग्रामीण समाज की पहचान उसके निवासियों द्वारा पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाकर रहने से होती है, जो उनकी दैनिक दिनचर्या और बाहरी प्रभावों के प्रति प्रतिरोध को आकार देता है। भारत के छत्तीसगढ़ में, कृषि लंबे समय से ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्राथमिक व्यावसाय रहा है। सतनामी एक ऐसी अनुसूचित जाति है जो ब्राह्मणवाद और उच्च जाति संस्थाओं को अस्वीकार करती है और जातिवाद में विश्वास नहीं करती (मांजरे, 2016)। छत्तीसगढ़ में सतनामी समुदाय की बहुलता मिलती है, जिसके साथ प्राचीन कल से ही छुआ-छूत का व्यवहार करते आ रहे है | इन्हें धार्मिक व सामाजिक स्थलों पर जाने में कुछ हद तक मनाही है (सिंह, 2013)। भारतीय संविधान के अनुसार सतनामी को अनुसूचित जाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो छत्तीसगढ़ की कुल जनसंख्या का 12% है। सतनामी पहली बार ***19***वीं शताब्दी की शुरुआत में छत्तीसगढ़ में दिखाई दिए। गुरु घासीदास बाबा को सतनाम धर्म का प्रवर्तक मन जाता है | जिन्होंने सतनाम धर्म का प्रचार-प्रसार किया एवं उनके अनुयायी को सतनामी कहा गया | यही से सतनामी जाति की उत्पत्ति माना जाता है | यह धर्म गुरु घासीदास की शिक्षाओं का पालन करने और सीधा रास्ता अपनाकर उनका अनुकरण करने करने पर बल देता हैं। गुरु घासीदास बाबा द्वारा 'मनखे मनखे एक समान आए' की शिक्षा प्रदान की गई है, जिनका मूल आधार सभी वर्गों के व्यक्तियों के साथ एक समान मानव भाव रखना, बुराइयों एवं अन्धविश्वास को दूर करना | सतनामी समाज में कुछ आहार प्रतिबंधों से भी जुड़े हैं, जिनमें मांस और कुछ सब्जियां, जैसे टमाटर, मिर्च, दाल, बैंगन आदि शामिल हैं। यह अध्ययन बिलासपुर में किया गया जिसमे 30 उत्तरदाताओं से तथ्य का संग्रह किया गया है | जिसमे 22 (73.30%) पुरुष व 08 (26.60%) महिलाएं शामिल है | में 8(26.60)% और 22(73.30%) महिला उत्तरदाता शामिल हैं। अध्ययन में आयु वर्ग का विवरण भी दर्शाया गया है जिसमे 4(13%) उत्तरदाता 18 से *30* वर्ष की आयु वर्ग, 16(53%) 30 से 45 वर्ष की आयु वर्ग के हैं, 6(20%) 45 से *60* वर्ष के हैं और 4(13%) 60 वर्ष से अधिक आयु के हैं। उत्तरदाताओं के बीच वैवाहिक स्थिति का वितरण दर्शाया गया है, जिसमें सबसे अधिक *86.6%* उत्तरदाता विवाहित श्रेणी के हैं, दूसरे सबसे अधिक 7% और 6.6% अविवाहित और विधवा श्रेणी के हैं और कोई भी तलाकशुदा और विधुर श्रेणी से संबंधित नहीं है। सतनामी के बीच तलाक को कम देखा जाता है। उनकी व्यावसायिक पृष्ठभूमि के संबंध में तथ्य संग्रह से पता चलता है कि 40% मजदूर व श्रमिक हैं एवं 60% उत्तरदाता शासकीय व निजी सेवा में कार्यरत है | सतनामी समाज में पारंपरिक जीवन शैली और शिक्षा के विकास के प्रति विशेष झुकाव है, जो एक सकारात्मक सोच को बढ़ावा दे रहा है |

घरेलू आय

घरेलू आय विकास के सबसे महत्वपूर्ण संकेतकों में से एक है। सतनामी परिवारों के सर्वांगीण विकास में इसके महत्व को दर्शाने के लिए किए गए अध्ययन में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त घरेलू आय का दस्तावेजीकरण करने का प्रयास किया गया। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त वार्षिक आय को एक साथ मिलाकर कुल 30 परिवारों की श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया। 33.30% सतनामी परिवारों की वार्षिक आय 10,000 से 50,000/- रुपये प्रति परिवार 57.70% सतनामी परिवारों की वार्षिक आय 51,000/- से 1,00,000/- रुपये प्रति परिवार एवं 10% सतनामी परिवारों की वार्षिक आय 1,00,000/- से अधिक प्रति परिवार है | व्यवसाय में लगे परिवारों की आय में उच्च उतार-चढ़ाव होता है, जबकि निजी और सरकारी क्षेत्रों में लगे परिवारों की आय स्थिर रहती है, जिसका ग्रामीण घरेलू विकास पर निवेश पर संतुलित प्रभाव पड़ता है। 45% सतनामी परिवारों के पास अपनी पट्टे की ज़मीन पर अपना पक्का घर है, 55% सतनामी परिवार किराए के मकानों में रहते हैं। सभी 100% सतनामी परिवारों के पास अपना मतदाता पहचान पत्र, आधार कार्ड और पीडीएस कार्ड है |

भोजन उपभोग पद्धति

सतनामी समाज में भोजन को पवित्र माना जाता है | भोजन का सेवन व्यक्ति की सांस्कृतिक प्रथाओं और धार्मिक पृष्ठभूमि से निर्देशित होता है। इसका एक धार्मिक मूल्य है जो लोगों के शरीर और मन पर प्रभाव डालता है। सतनामी समुदायों में भोजन पद्धति को बाबा गुरु घासीदास द्वारा निर्धारित कुछ सिद्धांतों द्वारा निर्देशित माना जाता है। सतनाम में का मान्यता कि सतनामी जाति समूहों को मछली, अंडा, मांस, शराब आदि मांसाहारी भोजन वर्जित है । यह शरीर के तापमान और समाज में व्यक्ति की मानसिक स्थिति को प्रभावित करता है। समाज में शांतिपूर्ण जीवन और रोगमुक्त स्वास्थ्य के लिए शाकाहारी वस्तुओं से भरपूर सादा और संतुलित आहार लेना चाहिए। शाकाहारी भोजन मन में शांतिपूर्ण और अहिंसक विचार लाता है, जबकि मांसाहारी भोजन मानसिक स्थिति पर प्रभाव डालता है जिससे हिंसा, लालच, स्वार्थ और शहरी लोगों में शत्रुता जैसे

नकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं। इसलिए, गुरु घासीदास बाबा ने अपने अनुयायियों को शाकाहारी भोजन का सेवन करने का निर्देश दिया, ताकि शरीर और मन शांत रहे। दोनों को ध्यान में रखते हुए, अध्ययन ने सतनामी परिवारों के खान-पान का दस्तावेजीकरण करने का प्रयास किया। विभिन्न मौसमों में घरों द्वारा भोजन की खपत की जनगणना से पता चला कि मौसमी सब्जियों की उपलब्धता उनके भोजन की सामग्री को प्रभावित करती है इसके अलावा त्योहारों, जन्मदिन, शादी और मृत्यु समारोहों में तैयार किए जाने वाले विशेष खाद्य पदार्थों में खीर, पूरी, मालपुआ, पनीर, सलोनी, खुरमी, आदि शामिल हैं जो सभी सतनामी परिवारों में आम हैं। सतनामी परिवारों द्वारा गैर-शाकाहारी वस्तुओं के सेवन को सिद्धांत रूप में अस्वीकार किया जाता है, लेकिन वर्तमान व्यवहार में यह देखा गया कि लगभग 5% सतनामी परिवार में मांसाहारी के रूप में चिकन अंडा और मछली का सेवन करते हैं, जो उनके भोजन पद्धति को दर्शाता है । मांसाहारी वस्तुओं को खाने की आवृत्ति भी एकत्र की गई, जो दर्शाती है कि लगभग 40% परिवार सप्ताह में एक बार उपभोग करते हैं, 34% परिवार औपचारिक अवसर के रूप में उपभोग करते हैं, 13% सप्ताह में दो बार उपभोग करते हैं जबकि 13% प्रति सप्ताह तीन बार उपभोग करते हैं। उपभोग की अवधि एकत्र की गई थी, जो दर्शाती है कि 40 वर्ष से अधिक आयु की वरिष्ठ पीढ़ी में से 60% ने बचपन से ही मांसाहारी चीजों का सेवन करना शुरू कर दिया है, जबकि 60 वर्ष से अधिक आयु के 40% सतनामी पुरुष सदस्यों ने भी बचपन से ही मांसाहारी खाद्य पदार्थों का सेवन करना शुरू कर दिया है।

सतनाम जीवन पद्धति

अध्ययन में सतनाम की अवधारणा और अर्थ के बारे में उत्तरदाताओं की समझ जानने की कोशिश की गई। कई बार सतनाम के अर्थ की समझ ही सतनामी लोगों के जीवन और जीवन-यापन को प्रभावित करने में बहुत मायने रखती है। सतनाम के अर्थ पर प्रतिक्रियाओं पर गौर करने से पता चलता है कि लगभग 50% उत्तरदाता सतनाम को 'सत्य' मानते हैं, जबकि 26% इसे सत्य नही मानते, 24% सतनाम को बाबा गुरु घासीदास के अनुयायी मानते । सतनाम के बारे में गहन अध्ययन करने से उत्तरदाताओं से बाबा गुरु घासीदास के मूल सिद्धांतों के बारे में ज्ञात हुआ । तथ्यों का विश्लेषण करने पर पता चला कि सभी 30 (100%) उत्तरदाता गुरु घासीदास बाबा के मूल सिद्धांतों को समझने में सक्षम थे। 35% उत्तरदाताओ का मानना है कि 'मनके मनके एक समान हे और छुआछूत पर विश्वास न करना', जबकि 65% उत्तरदाताओं का मानना है कि जीवन में सत्य का पालन, अहिंसा का पालन, दैनिक जीवन में सही मार्ग पर चलना, भेदभाव न करना और मांस-मदिरा के सेवन से दूर रहना । उत्तरदाताओं से सतनामी परिवारों पर सतनाम मूल्यों के प्रभाव की तीव्रता के बारे में पूछा गया। वे इस बात पर सैद्धांतिक रूप से सहमत थे कि सतनाम अनुयायियों को अपने दैनिक जीवन में कुछ मूल्यों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिन्हें बाबा गुरु घासीदास के सिद्धांत माना जाता है। इस संबंध में तथ्य संग्रह से पता चलता है कि लगभग 26% उत्तरदाताओं ने देखा कि वे अपने माथे पर 'सफ़ेद तिलक' का उपयोग कर रहे हैं, 20% उत्तरदाता दैनिक आधार पर 'कंठी माला' व 'तुलसी की माला' का आभूषण के रूप में उपयोग करते हैं और 34% उत्तरदाता दिन-प्रतिदिन के जीवन में सफेद कपड़े पहनते हैं, लेकिन केवल 20% ही बाबा गुरु घासीदास की प्रार्थना करने के बजाय दैनिक ध्यान का पालन करते हैं। सतनामी परिवार दैनिक जीवन में घरेलू और सामुदायिक दोनों स्तरों पर विभिन्न त्योहार और उत्सव मनाते हैं। सभी परिवार इस बात पर सहमत थे कि 18 दिसंबर को बाबा गुरु घासीदास की जयंती के रूप में घरेलू और सामुदायिक दोनों स्तरों पर मनाया जाता है, जिसमें सभी लोग 'जैत खंभ' पर एकत्रित होकर सामुदायिक और व्यक्तिगत घरेलू स्तर पर विभिन्न अनुष्ठान करते हैं। यदि घरेलू स्तर पर वे अच्छे व्यंजन बनाते हैं और बाबा की प्रार्थना करते हैं। सतनाम अनुयायी होने के नाते उन्हें अन्य धार्मिक समुदाय के त्योहार नहीं मनाने चाहिए। हालाँकि, सामाजिक जीवन और जीवनयापन के हिस्से के रूप में सतनामी दिवाली, होली, रक्षाबंधन और हरेली भी मनाते हैं जो हिंदुओं के शाश्वत और मूल मूल्यों को दर्शाता है। सतनामी परिवार सतनामी धर्म के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के रूप में फोटोग्राफी, मूर्ति और जैत खंबा का पालन करते हैं। अनुयायियों को गुरु घासीदास के आदेश के अनुसार दिन-प्रतिदिन के अनुष्ठान और कुछ संस्कार करने चाहिए। सर्वेक्षण में पाया गया कि बाबा गुरु घासीदास के चित्र के अलावा सतनामी परिवार अन्य देवी-देवताओं जैसे शिव, राम, गणेश, हनुमान, मां दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती, सीता आदि के चित्र भी रखते हैं। जब पूछा गया कि ऐसा क्यों है, तो उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में हिंदू बहुल क्षेत्र का प्रभाव है, जिसे महिलाओं, बच्चों और पुरुष सदस्यों द्वारा स्वीकार किया गया है।

सतनामी समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में निरंतरता और परिवर्तन

सतनामी समाज के खान-पान, सेवन और त्योहारों पर आधारित यह अध्ययन, जिसमें शोध से ज्ञात हुआ है कि मांसाहारी भोजन करने से कुछ सतनामी परिवारों की खान-पान की आदतों में उल्लेखनीय बदलाव आया है। पहले, वे पूर्णतः शाकाहारी थे, लेकिन कुछ सतनामी परिवारों ने हाल ही में अपने परिवेश और इंटरनेट के कारण मांसाहारी भोजन का सेवन शुरू कर दिया है, जिससे उन्हें यह विश्वास हो गया है कि यह एक सामान्य आदत है। वर्तमान समय में कुछ सतनामी परिवार के सदस्य नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं, जिनमें शराब, सिगरेट, तंबाकू, गुड़ाखू आदि शामिल हैं, जो गुरु घासीदास बाबा की शिक्षाओं के विरुद्ध है। हालाँकि गुरु घासीदास बाबा की शिक्षाएँ नैतिक सदाचार, सादगी और खतरनाक पदार्थों से परहेज करने का उपदेश देती हैं, फिर भी लोगों के निर्णय और कार्य हैं। कुछ लोग इन दिशानिर्देशों का पालन नहीं कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सतनामी मान्यताओं के विरुद्ध कार्य हैं। सतनामी समुदाय द्वारा त्योहार मनाने के तरीके में कई बदलाव देखे गए हैं। हाल ही में उन्होंने अन्य समुदायों के त्योहारों, जैसे दिवाली, होली, मकर संक्रांति, दुर्गा पूजा और नवरात्रि, महाशिवरात्रि आदि का पालन करना शुरू किया है।

दैनिक जीवन में परिवर्तन

सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी प्रभावों के कारण सतनामी समुदाय के सदस्यों के जीवन में समय के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। धीरे-धीरे उन्होंने पारंपरिक सफेद धोती और कुर्ता, कंठी माला, तुलसी की माला और तिलक लगाने की बजाय जींस, शर्ट जैसे पश्चिमी परिधान अपना लिए और पारंपरिक आभूषणों को या तो बदल दिया या त्याग दिया | जहाँ पहले शिक्षा तक पहुँच सीमित थी, जिसके परिणामस्वरूप साक्षरता दर कम थी, वहीं बाद में उन्हें बेहतर शैक्षिक अवसर और ज्ञान तक अधिक पहुँच का अनुभव हुआ; उनके व्यवसाय जो कभी मुख्य रूप से कृषि, हस्तशिल्प और छोटे व्यवसायों तक सीमित थे, अब व्यावसायिक सेवाओं, उद्यमिता और कुशल व्यापार जैसे विविध क्षेत्रों में विस्तारित हो गए हैं | स्वास्थ्य सेवा, जो कभी दुर्लभ थी, बेहतर बुनियादी ढाँचे और निवारक देखभाल के बारे में बढ़ती जागरूकता के माध्यम से अधिक सुलभ हो गई है | जहाँ पहले सामाजिक गतिशीलता सीमित थी और एकीकरण सीमित था, वहीं अब वे तेजी से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कर रहे हैं, व्यापक सांस्कृतिक संपर्क का अनुभव कर रहे

हैं और मुख्यधारा के समाज से जुड़ रहे हैं और यद्यपि उन्होंने पहले सांस्कृतिक परंपराओं और धार्मिक प्रथाओं के संरक्षण पर ज़ोर दिया था, फिर भी उन्होंने आधुनिक प्रभावों के अनुकूल ढलते हुए और पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक संचरण को बढ़ावा देते हुए सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखना जारी रखा।

सतनाम के आचार-विचार और सिद्धांत

1. **सामाजिक समानता:** गुरु घासीदास बाबा ने सामाजिक समानता पर बल दिया और जाति-आधारित पूर्वाग्रहों की निंदा की। कुछ सतनामी समुदायों की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं या दृष्टिकोणों में समय के साथ इस अवधारणा से विचलन के परिणामस्वरूप जाति-आधारित असमानताएँ या भेद उत्पन्न हुए होंगे।
2. **सादगी और विनम्रता:** गुरु घासीदास बाबा ने आध्यात्मिक विकास और भक्ति पर केंद्रित एक विनम्र और सरल जीवन शैली को बढ़ावा दिया। हालाँकि, कुछ समुदाय के सदस्य वित्तीय लक्ष्यों को प्राथमिकता दे रहे हैं या ऐसी जीवन शैली अपना सकते हैं जो इन मूल्यों से विचलित हो जाती है क्योंकि उनके समुदाय बदलते हैं और अधिक आधुनिक होते जाते हैं।
3. **सेवा और करुणा:** गुरु घासीदास बाबा की मूल शिक्षाएँ निस्वार्थ सेवा और सभी जीवों के प्रति करुणा के सिद्धांत हैं। यद्यपि कई सतनामी इन आदर्शों का पालन करते हैं, फिर भी ऐसी स्थितियाँ होती हैं जिनमें व्यक्ति या समूह अपने हितों को दूसरों के कल्याण से आगे रखते हैं।
4. **अहिंसा:** गुरु घासीदास बाबा ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और अहिंसा की वकालत की। हालाँकि, कुछ स्थितियों में, समुदाय के भीतर आंतरिक संघर्ष या विवाद या बाहरी प्रभाव ऐसे कार्यों को जन्म दे सकते हैं जो इस सिद्धांत के विपरीत हैं।
5. **आध्यात्मिक अभ्यास:** गुरु घासीदास बाबा ने ध्यान, जप और ईश्वर की भक्ति जैसे आध्यात्मिक अनुशासन को प्रोत्साहित किया।
6. **एकता और सद्भाव:** गुरु घासीदास बाबा ने सभी समूहों और धर्मों के बीच सम्मान, सद्भाव और एकता के मूल्यों का समर्थन किया। हालाँकि, तनाव या विभाजन ऐतिहासिक, सामाजिक, या राजनीतिक मुद्दों से उत्पन्न हो सकते हैं, या तो सतनामी समुदाय के भीतर या अन्य समूहों के साथ।
7. **पर्यावरण प्रबंधन:** गुरु घासीदास बाबा ने पर्यावरण की रक्षा और प्राकृतिक दुनिया के साथ संतुलन में रहने के महत्व पर बल दिया।

सतनामी के समावेशी विकास और प्रगति की समीक्षा

वर्तमान अध्ययन का लक्ष्य यह पता लगाना है कि सतनामी परिवार इस अवधारणा को कैसे समझते हैं, साथ ही समय के साथ उनके सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन और जीवनशैली में कैसे बदलाव आया है। वे गुरु घासीदास बाबा की शिक्षाओं का पालन करते हैं। सतनामी आंदोलन के संस्थापक, गुरु घासीदास बाबा ने 'सतनाम' की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया, जिसका अर्थ है 'सच्चा नाम' या 'सत नाम' या 'सच्चा ईश्वर'। उन्होंने पारंपरिक हिंदू धर्म में पूजे जाने वाले अनेक देवताओं का खंडन किया और इसके बजाय एक ही ईश्वर की पूजा पर ज़ोर दिया। गुरु घासीदास ने सिखाया कि आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने और जन्म-मृत्यु के चक्र को समाप्त करने के लिए सच्चे नाम के प्रति समर्पण आवश्यक है। सतनाम का विचार सामाजिक वर्ग या जाति से परे सभी लोगों की समानता और एकता का प्रतिनिधित्व करता था। गुरु घासीदास के अनुसार, नैतिक जीवन जीने और 'सच्चे नाम' या 'सत नाम ' के प्रति समर्पण विकसित करके व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर सकता है और पूर्वाग्रहों और जातिवाद पर विजय प्राप्त कर सकता है। सतनामी परिवारों के सामाजिक-आर्थिक स्वरूप में एक उल्लेखनीय खोज उनकी आय के वितरण, शिक्षा के स्तर, स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच, भूमि के स्वामित्व और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में उनकी भागीदारी में पाई जा सकती है। ये सभी कारक उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान कर सकते हैं और लक्षित हस्तक्षेप या सहायता के लिए मार्ग सुझा सकते हैं। कुछ सतनामी सदस्य विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों, जैसे शराब, सिगरेट, तंबाकू और गुड़ाखू का सेवन करते हैं, जो गुरु घासीदास बाबा की शिक्षाओं के विरुद्ध है। हालाँकि उनकी शिक्षाएँ नैतिक निष्ठा, सादगी और हानिकारक पदार्थों से दूर रहने का आह्वान करती हैं, फिर भी व्यक्तिगत पसंद और व्यवहार भिन्न हो सकते हैं और कुछ लोग इन सिद्धांतों का कड़ाई से पालन नहीं कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ऐसे व्यवहार होते हैं जो सतनामी मूल्यों के विपरीत होते हैं। सतनामी परिवारों के जीवन में कई परिवर्तन देखे गए हैं, जैसे उनके जीवन स्तर में वृद्धि या कमी, अस्पृश्यता, और सतनामी समुदाय की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि। गुरु घासीदास के जीवन और शिक्षाओं को समर्पित विशेष प्रार्थनाएँ, भजन और प्रवचन आमतौर पर उत्सवों का हिस्सा होते हैं। सतनामी समुदाय के त्योहारों को मनाने के तरीके में कई बदलाव देखे जा सकते हैं।

निष्कर्ष

सतनामी होने के नाते, एक व्यक्ति सतनामी समुदाय के मूल सिद्धांतों, विश्वासों और रीति-रिवाजों को अपनाता है, जो आध्यात्मिकता, समतावाद और सांप्रदायिक सद्भाव पर दृढ़ता से आधारित हैं। गुरु घासीदास और अन्य सतनामी-सम्मानित आध्यात्मिक नेताओं के प्रति निरंतर प्रार्थना, ध्यान और भक्ति। दैनिक जीवन में सत्य, विनय, करुणा और अहिंसा जैसे नैतिक मूल्यों को बनाए रखना। सामाजिक आयोजनों, धार्मिक अनुष्ठानों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी जो सतनामियों के बीच एकता को बढ़ावा देते हैं और सामाजिक बंधन स्थापित करते हैं। जरूरतमंद लोगों की मदद करना, सहयोग और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देना और आपसी सहायता और समर्थन सामुदायिक नेटवर्क में योगदान देना। सतनामी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और आगे बढ़ाने के लक्ष्य के साथ गीत, नृत्य, कला और कहानी के माध्यम से भावी पीढ़ियों तक रीति-रिवाजों और मूल्यों को पहुंचाना। सतनामी उत्सवों और रीति-रिवाजों का सम्मान करना जो समुदाय की विशिष्ट संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत को प्रदर्शित करते हैं। गुरु घासीदास द्वारा सिखाई गई शिक्षा के अनुसार, सभी के साथ निष्पक्ष और सम्मान के साथ व्यवहार करके सामाजिक समानता की अवधारणा को कायम रखना और जाति-आधारित पूर्वाग्रह को खारिज करना। सतनामी समुदाय के भीतर और बाहर सामाजिक न्याय, सशक्तिकरण और शिक्षा को आगे बढ़ाने वाले कार्यक्रमों का समर्थन करना। सतनामी सम्मान के अनुरूप, पर्यावरण का सम्मान और पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करने वाली एक स्थायी जीवन शैली को अपनाना, सतनामियों के आध्यात्मिक ज्ञान और संतोष पर जोर देने के अनुरूप भौतिकवादी गतिविधियों की तुलना में आध्यात्मिक तृप्ति, आंतरिक शांति और भावनात्मक कल्याण को प्राथमिकता देना, व्यक्तिगत विकास, सशक्तिकरण और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के साधन के रूप में शिक्षा की सराहना करना, सार्थक जीवन जीने के लिए निरंतर सीखने, आलोचनात्मक सोच और आत्म-चिंतन का समर्थन करना आदि का समावेश उनके सिद्धांत को दर्शाता है | यही कारण है कि समुदाय की गुरु घासीदास बाबा के प्रति अनन्य आस्था एवं

समर्पण भावना आज भी विद्यामान है |

संदर्भ सूची

1. अम्बेडकर बी. आर. जाति का विनाश। 1936।
2. भारत सरकार. जनगणना 2011: प्राथमिक जनगणना सार। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2011।
3. देशपांडे एस. ग्रामीण भारत में अनुसूचित जातियों की बहिष्करणात्मक असमानताएँ। इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली। 2011।
4. जांगड़े के. छत्तीसगढ़ में दलितों की राजनीति। नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग; 2009।
5. जैन एम. मध्य भारत में दलित आंदोलन। नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स; 2015।
6. राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग. वार्षिक प्रतिवेदन: अनुसूचित जातियाँ। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2021।
7. शुक्ला एस. सतनामी समाज और गुरु घासीदास। रायपुर: छत्तीसगढ़ ग्रंथ अकादमी; 2001।
8. साहू आर. सतनामी समुदाय में आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन। जर्नल ऑफ सोशल इन्क्लूजन स्टडीज। 2020।
9. योजना आयोग, भारत सरकार. समावेशी विकास और वृद्धि: द्वादश पंचवर्षीय योजना। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2013।